Sanskrit (Hons)
B. A. (1st Yr Pass)

डॉ. [illegible]
अतिथि [illegible]
आर.सी.एस. कॉलेज [illegible]

लघुसिद्धान्तकौमुदी
(समास)

पूर्व में बताया गया है कि लघुसिद्धान्तकौमुदी कार आचार्य वरदराज ने पूर्व पदप्रधान समास को अव्ययीभाव समास कहा है। अव्ययीभाव समास ऐसा कि नाम से ही स्पष्ट है, शब्द, अव्ययों के साथ समासित होते हैं। अव्ययीभाव समास मुख्यतः 'अव्ययं विभक्ति समीप समृद्धि व्यृद्धयर्थाभावा त्यया सम्प्रति शब्दप्रादुर्भाव पश्चाद्यथानुपूर्व्य यौगपद्य सादृश्य साकल्यान्त वचनेषु' सूत्र से होते हैं। पूर्व में इनके अनेक अर्थों के योग में सम्पादित होने वाले समास के बारे में बता दिया गया है, अब 'यथा' के योग में सम्पन्न समास के बारे में बताया जाएगा।

यथा - सामान्यतः 'यथा' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'जैसा' होता है, परन्तु

व्याकरणशास्त्र में 'यथा' शब्द के अनेक अर्थ होते हैं—

'योग्यता वीप्सा पदार्थातिवृत्ति सादृश्यानि यथार्थाः'

योग्यता - जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है 'योग्यता' से तात्पर्य उस वस्तु या व्यक्ति में पाए जाने वाले स्वाभाविक गुणों से है। यहाँ योग्यता से तात्पर्य उसके अस्थायित्व से नहीं है, अपितु उसमें पाए जाने वाले स्वाभाविकता से है।

वीप्सा - किसी अर्थ या शब्द का बार-बार प्रयोग 'वीप्सा' कहलाता है। यह भी 'यथा' के अर्थ में आता है।

पदार्थातिवृत्ति - 'किसी अर्थ या शब्द को बिना अतिक्रमण किए हुए' उसका वास्तविक अर्थ होता है। यह भी 'यथा' के अर्थ में आता है।

सादृश्य - 'सादृश्य' का अर्थ 'समानता' है। यह गुण एवं रूप दोनों में सम्भवित है।

Rahul Ram Pk

— क्रमशः —